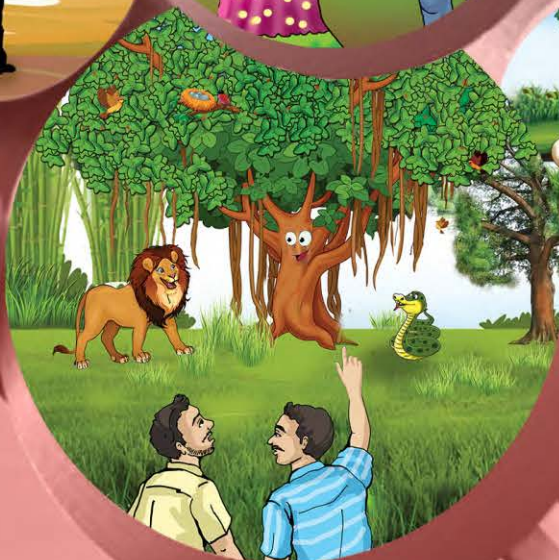
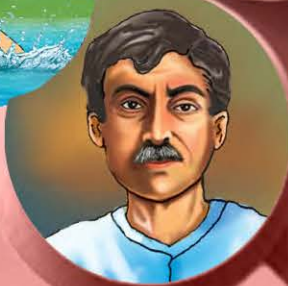




हिंदी युवकभारती

ग्यारहवीं कक्षा



भारत का संविधान

भाग 4 क

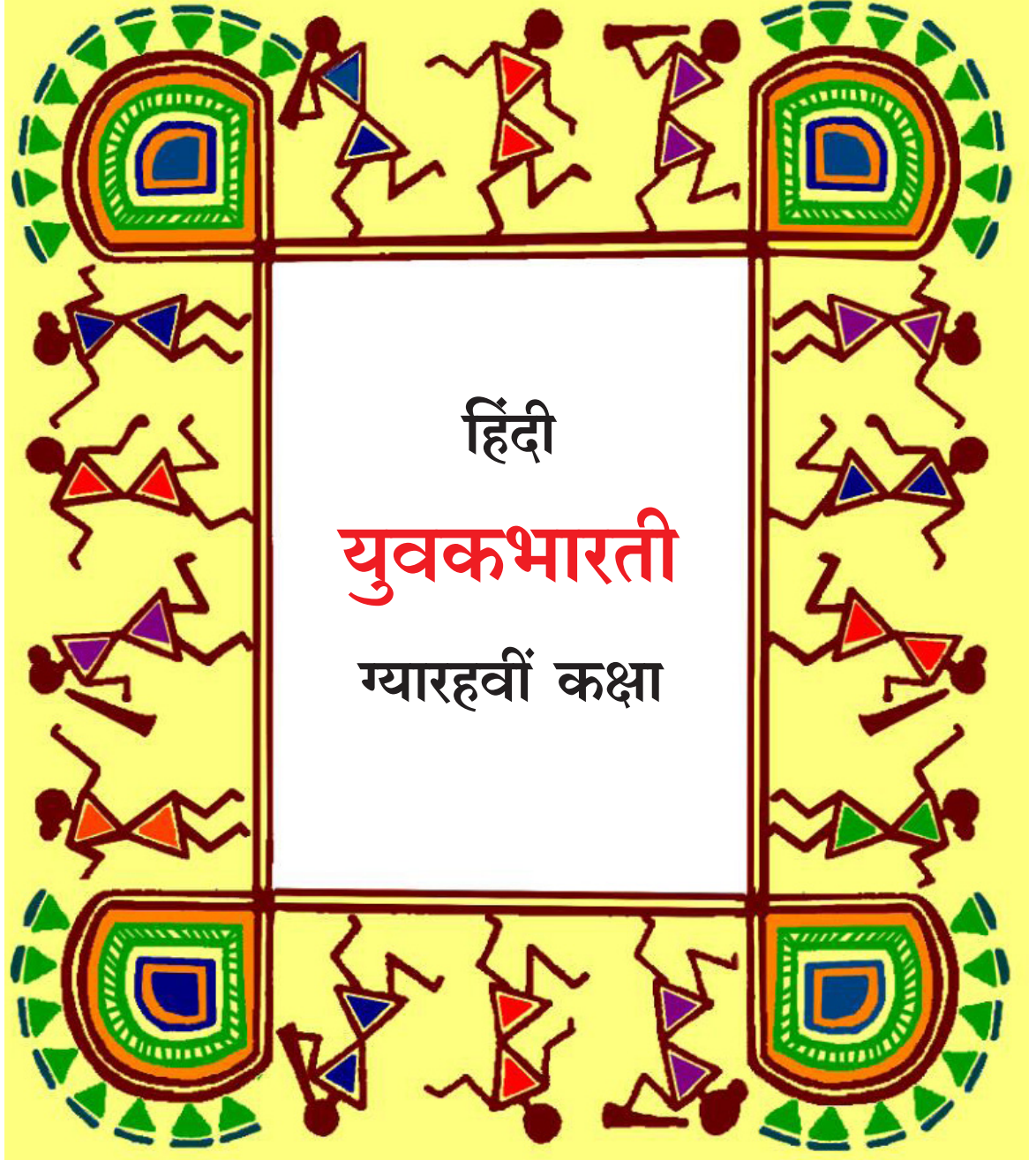
मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;
- (ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया।
दि. २०.६.२०१९ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।



महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे



Z8U8M7

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA APP' द्वारा पाठ्यपुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से संबंधित अध्ययन-अध्यापन के लिए दृक-श्राव्य सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति : २०१९

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

तीसरा पुनर्मुद्रण : २०२२

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. छाया पाटील - अध्यक्ष
प्रा. अनुया दळवी - सदस्य
डॉ. विजयकुमार रोडे - सदस्य
डॉ. शैला ललवानी - सदस्य
डॉ. अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

प्रकाशक

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ. ममता पारस मेहता
श्रीमती दिप्ती दिलिप सावंत
डॉ. वनश्री मुकुंद देशपांडे
डॉ. ममता शशि झा
सौ. स्वाती कान्हेगावकर
सौ. माया एम. कोथळीकर
सुश्री मनिषा महादेव गावड
श्री चंद्रशेखर मुरलीधर विंचू
प्रा. सुधाकर नरहरी शिंदे
डॉ. उमेश अशोक शिंदे
डॉ. कविता प्रविण पवार
सौ. मीना विनोद शर्मा
सौ. वनिता राजेंद्र लोणकर
प्रा. सोमनाथ वांजरवाडे

संयोजन

डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, सहायक विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : विवेकानंद शिवशंकर पाटील

चित्रांकन : मयुरा डफळ, राजेश लवळेकर, मयूर फुलपगारे

निर्मिति

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव

मुद्रणादेश :

मुद्रक :

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ॥

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-
बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की
समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं
पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूंगा/करूंगी कि उन
परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता
मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों
का सम्मान करूंगा/करूंगी और हर एक से
सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूंगा/करूंगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने
देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा
रखूंगा/रखूंगी । उनकी भलाई और समृद्धि में
ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थी मित्रो !

आप सभी का ग्यारहवीं कक्षा में हृदयपूर्वक स्वागत ! युवकभारती हिंदी पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें बहुत हर्ष हो रहा है ।

भाषा और जीवन का अटूट संबंध है । देश की राजभाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा को हम अपने बहुत समीप महसूस करते हैं । भाषा का व्यावहारिक उपयोग प्रभावी करने के लिए आपको हिंदी विषय की ओर 'भाषा' की दृष्टि से देखना होगा । भाषाई कौशलों को अवगतकर समृद्ध बनाने के लिए यह पाठ्यपुस्तक आपके लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगी । मूल्यमापन की दृष्टि से मुख्यतः पाँच विभाग किए गए हैं । गद्य-पद्य, विशेष विधा, व्यावहारिक हिंदी और व्याकरण । अध्ययन अध्यापन की दृष्टि से यह रचना बहुत उपयुक्त होगी ।

जीवन की चुनौतियों को स्वीकारने की शक्ति देने की प्रेरणा साहित्य में निहित होती है । इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से आप साहित्य की विभिन्न विधाओं की जानकारी के साथ पुराने तथा नए रचनाकारों तथा उनकी लेखन शैली से परिचित होंगे । इनके द्वारा आप हिंदी भाषा का समृद्ध साहित्य तथा उसकी व्यापकता को समझ पाएँगे ।

विशेष साहित्य विधा के रूप में 'नुक्कड़ नाटक' का समावेश किया गया है । इस विधा का संक्षिप्त परिचय तथा दो नुक्कड़ नाटकों का समावेश पाठ्यपुस्तक की विशेषता है । आप इस 'दृक्-श्राव्य' साहित्य विधा का अध्ययन करेंगे । नुक्कड़ नाटक की विशेषता है कि उसे रंगमंच की आवश्यकता नहीं होती, चौराहे पर किसी भी समस्या को प्रभावी ढंग से नुक्कड़ नाटक द्वारा प्रस्तुत किया जाता है । इसके लिए विशेष वेशभूषा अथवा रंगभूषा की आवश्यकता नहीं होती । इस विधा का उपयोग आप भविष्य में आजीविका के लिए भी कर सकते हैं । नुक्कड़ नाटक आपकी समाज के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाते हैं तथा नाट्य व्यवसाय की ओर उन्मुख भी करते हैं ।

व्यावहारिक व्याकरण पाठ्यपुस्तक का मूल उद्देश्य है जिसके कारण आप व्याकरण बहुत ही सहजता से समझ पाएँगे । व्यावहारिक हिंदी की इकाई में समसामयिक विषयों तथा उभरते क्षेत्रों से संबंधित पाठों को समाविष्ट किया गया है जिसके माध्यम से आप इन क्षेत्रों में व्यवसाय के अवसरों को पाएँगे ।

आपकी विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति तथा सृजनात्मकता का विकास हो इसे ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार की कृतियों का समावेश पाठ्यपुस्तक में किया गया है, जिसमें आप भी अपनी वैचारिक क्षमताओं को विकसित करते हुए नई-नई कृतियाँ बना सकते हैं । इन कृतियों की सहायता से पाठ एवं उससे संबंधित विषयों को समझने में आपको सहजता होगी । आप सरलता से विषय वस्तुओं को समझ पाएँगे तथा आपका भाषाकौशल विकसित होगा । आपकी भाषा समृद्ध होगी और आप अपनी विशिष्ट शैली बनाएँगे । पाठ के मुद्दों से संबंधित अनेक उपयुक्त संदर्भ क्यू. आर. कोड के माध्यम से आपको पढ़ने के लिए उपलब्ध होंगे ।

उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्यारहवीं कक्षा में कृतिपत्रिका के माध्यम से आपके हिंदी विषय का मूल्यमापन होगा, जिसके लिए आपको आकलन, रसास्वादन तथा अभिव्यक्ति आदि प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करना होगा । इसके लिए प्रत्येक पाठ के बाद विविध कृतियाँ दी गई हैं जो आपका मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होंगी ।

'पढ़ते रहें, लिखते रहें, अभिव्यक्त होते रहें ।'

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य तथा यश प्राप्ति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ !



डॉ. सुनिल मगर
संचालक

पुणे

दिनांक : २० जून २०१९

भारतीय सौर दिनांक : ३० ज्येष्ठ १९४९

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि ग्यारहवीं कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों :

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	<ul style="list-style-type: none"> ● गद्य, पद्य की रसानुभूति एवं भाषा सौंदर्य को सुनना, समझना तथा सुनाना । ● जनसंचार माध्यमों से प्राप्त सामग्री का आकलन करते हुए सुनना तथा विश्लेषण करना । ● प्रवासी साहित्य को सुनना तथा सुनाना ।
२.	भाषण- संभाषण	<ul style="list-style-type: none"> ● विभिन्न विषयों के परिसंवादों में सहभागी होकर विचार प्रकट करना । ● विभिन्न विषयों को समझकर रेडियो जॉकी के रूप में उन्हें प्रस्तुत करना । ● प्रसंगानुरूप विविध विषयों के लिए समाचार तैयार करके प्रस्तुत करना ।
३.	वाचन	<ul style="list-style-type: none"> ● विभिन्न साहित्यिक विधाओं का वाचन करना । ● पाठों से संबंधित संदर्भ ग्रंथों के वाचन के लिए प्रेरित करना । ● ई-साहित्य (ब्लॉग आदि) का नियमित रूप से वाचन करना ।
४.	लेखन	<ul style="list-style-type: none"> ● रेडियो जॉकी के रूप में प्रस्तुति के लिए लेखन करना । ● रोजगार की संभावनाओं की दृष्टि से विज्ञापन, संवाद, आदि का लेखन करना । ● संहिता आदि लेखन कौशल विकसित करना ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	<ul style="list-style-type: none"> ● रस (वात्सल्य, वीर, करुण, हास्य, भयानक) ● अलंकार (शब्दालंकार) ● वाक्य शुद्धीकरण, काल परिवर्तन, मुहावरे <p>शब्दसंपदा –</p> <p>शब्दसंपदा में शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थी, पर्यायवाची, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, कृदंत और तद्धित आदि का समावेश ।</p>
६.	अध्ययन कौशल	<ul style="list-style-type: none"> ● अंतरजाल, क्यू.आर. कोड, विभिन्न चैनल्स से प्राप्त जानकारी का उपयोग करना । ● पारिभाषिक शब्दावली – बैंक, वाणिज्य, विधि तथा विज्ञान से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली को जानना, समझना तथा प्रयोग करना । ● समाचार लेखन के सोपानों को समझना तथा समाचार लेखन के नमूने तैयार करना ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें

प्रस्तुत पुस्तक की पुनर्रचना राष्ट्रीय शैक्षिक नीति के अनुसार की गई है । १० वीं कक्षा तक विद्यार्थी हिंदी भाषा तथा साहित्य द्वारा जो ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें इसके अतिरिक्त नई विधाओं से परिचित कराने का प्रयास किया गया है । इस प्रयास को विद्यार्थियों तक पहुँचाना आपका उत्तरदायित्व है ।

आपको अध्ययन-अध्यापन का कार्य आरंभ करने के पूर्व पुस्तक में सम्मिलित समग्र पाठ्यांश को सूक्ष्मता तथा गंभीरता से पढ़कर उसका आकलन करना है । परिपूर्ण आकलन हेतु आप मुखपृष्ठ से लेकर मलपृष्ठ तक का गहरा अध्ययन करें । प्रस्तावना, भाषा विषयक क्षमताएँ, अनुक्रमणिका, पाठ, स्वाध्याय, कृतियाँ और परिशिष्ट आदि से परिचित होना प्रभावी अध्यापन के लिए आवश्यक है ।

किशोरावस्था से युवावस्था की ओर अग्रसर विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य का अधिक ज्ञान होना चाहिए, इस दृष्टि से गद्य और पद्य की नई विधाओं को समाविष्ट किया गया है । पद्य के अंतर्गत गीत, गजल, प्रवासी हिंदी-कविता, मध्ययुगीन काव्य से संत दादू दयाल की साखियाँ, संत सूरदास के पद तथा आधुनिक काव्य में नई कविता के साथ ही पहली बार नई विधा 'त्रिवेणी' का भी समावेश किया गया है । गद्य के अंतर्गत लघुकथा, कहानी, निबंध, उपन्यास के अंश के साथ व्यंग्य को भी अंतर्भूत किया गया है । रेडियो रूपक विधा को भी पहली बार लिया गया है ।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए तथा रोजगार प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक अर्थात् प्रयोजनमूलक हिंदी के अध्ययन की आवश्यकता है । इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक में रेडियो जॉकी तथा ई-अध्ययन जैसे अद्यतन पाठ दिए गए हैं । जिनका आकलन करके शिक्षक उन पाठों का महत्त्व एवं उपयोगिता विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करें ।

इस पाठ्यपुस्तक में 'नुक्कड़ नाटक' इस विशेष विधा का परिचय करवाया गया है । यह विधा सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने का सरल तरीका है ।

इस विधा का अध्यापन रोचक तथा प्रभावी करने के लिए शिक्षक अपने आस-पास की विविध समस्याओं से संबंधित छोटे-छोटे नुक्कड़ नाटक तैयारकर उन्हें विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत करा सकते हैं।

पुस्तक में समाविष्ट गद्य, पद्य तथा व्यावहारिक हिंदी की सभी रचनाओं के आरंभ में रचनाकार का परिचय, उनकी प्रमुख रचनाएँ तथा विविध जानकारी को अतिरिक्त ज्ञान के रूप में विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। प्रत्येक पाठ के उपरान्त परिपूर्ण तथा व्यापक अध्ययन की दृष्टि से स्वाध्याय के अंतर्गत शब्दार्थ, अभिव्यक्ति कौशल, लघूत्तरी प्रश्न, भाषाई कौशल आदि को कलात्मक और रोचक ढंग से तैयार किया गया है। आप अपने अनुभव तथा नवीन संकल्पनाओं का आधार लेकर पाठ के आशय को अधिक प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों तक पहुँचा सकते हैं।

व्यावहारिक व्याकरण के अंतर्गत नौवीं, दसवीं कक्षाओं में पढ़ाए जा चुके व्याकरण के अतिरिक्त 'रस' और 'अलंकार' का परिचय कराया गया है। 'रस' के नौ भेदों के अलावा वात्सल्य रस को दसवें रस के रूप में परिचित कराया है। 'रस' को ठीक ढंग से समझने के बाद कविता में व्याप्त विशिष्ट रस के भेद ढूँढ़ने को विद्यार्थियों से कहा गया है। 'अलंकार' के अंतर्गत मुख्यतः शब्दालंकार के उपभेद दिए गए हैं।

आप पाठ्यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों, संवैधानिक मूल्यों के विकास के अवसर विद्यार्थियों को अवश्य प्रदान करें। पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भ का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है।

आदर्श शिक्षक के लिए परिपूर्ण, प्रभावी तथा नवसंकल्पनाओं के साथ अध्यापन कार्य करना अपने आप में एक मौलिक कार्य होता है। इस मौलिक कार्य को इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाने का दृढ़ संकल्प, निष्ठा के साथ सभी शिक्षक करेंगे; ऐसा विश्वास है।

* अनुक्रमणिका *

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	प्रेरणा	त्रिवेणी	त्रिपुरारि	१-४
२.	लघुकथाएँ (अ) उषा की दीपावली (आ) मुस्कुराती चोट	लघुकथा	श्रीमती संतोष श्रीवास्तव	५-८
३.	पंद्रह अगस्त	गीत	गिरिजाकुमार माथुर	९-१२
४.	मेरा भला करने वालों से बचाएँ	व्यंग्य	डॉ. राजेंद्र सहगल	१३-१८
५.	मध्ययुगीन काव्य (अ) भक्ति महिमा	मध्ययुगीन काव्य	संत दादू दयाल	१९-२२
	(आ) बाल लीला	मध्ययुगीन काव्य	संत सूरदास	२३-२६
६.	कलम का सिपाही	रेडियो रूपक	डॉ. सुनील देवधर	२७-३३
७.	स्वागत है !	प्रवासी साहित्य-कविता	शाम दानीश्वर	३४-३८
८.	तत्सत	प्रतीकात्मक कहानी	जैनेंद्र कुमार	३९-४५
९.	गजलें (अ) दोस्ती (आ) मौजूद	गजल	डॉ. राहत इंदौरी	४६-४९
१०.	महत्त्वाकांक्षा और लोभ	वैचारिक निबंध	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	५०-५४
११.	भारती का सपूत	जीवनीपरक उपन्यास अंश	रांगेय राघव	५५-६०
१२.	सहर्ष स्वीकारा है	नई कविता	गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	६१-६४

विशेष अध्ययन हेतु

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१३.	नुक्कड़ नाटक (अ) मौसम (आ) अनमोल जिंदगी	नुक्कड़ नाटक	अरविंद गौड़	६५-८३

व्यावहारिक हिंदी

१४.	हिंदी में उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ	भाषण	डॉ. दामोदर खड़से	८४-८८
१५.	समाचार : जन से जनहित तक	लेख	डॉ. अमरनाथ 'अमर'	८९-९२
१६.	रेडियो जॉकी	साक्षात्कार	अनुराग पांडेय	९३-९७
१७.	ई-अध्ययन : नई दृष्टि	आलेख	संकलन	९८-१०१

परिशिष्ट

●	मुहावरे	१०२-१०३
●	भावार्थ : भक्ति महिमा और बाल लीला	१०४-१०५
●	रसास्वादन	१०५
●	रेडियो जॉकी और रेडियो संहिता	१०६
●	पारिभाषिक शब्दावली	१०७-१०८
●	ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्यकार	१०८
●	हिंदी साहित्यकारों के मूल नाम और उनके विशेष नाम	१०९
●	मुद्रित शोधन चिह्नदर्शक तालिका	११०